लखनऊ-जानकीपुरम। 'तनाव मुक्ति शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक डॉ. नीरज बोरा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें। कार्यक्रम के दौरान योगाभ्यास करते हुए शहर के भाई बहनें।

धन्य हैं श्रीकृष्ण और उनका जीवन

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण का जन्म दिन भारत के हर नगर में बहुत ही उत्साह और उल्लास से मनाया जाता है। इस दिन स्थान-स्थान पर देवताओं में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण की मधुर चर्चा होती है। भारतवासियों को श्रीकृष्ण बहुत प्रिय हैं क्योंकि उनका जीवन और उनका कार्य-व्यवहार बहुत पवित्र और मन को लुभाने वाला था। उनकी सतोगुणी काया, सौम्य चितवन, हर्षितमुखता और उनका शीतल स्वभाव सबके मन को मोहने वाला था।

श्रीकृष्ण का जन्म 'धन्य' था

श्रीकृष्ण के जन्म को लोग बहुत ही 'धन्य' मानते हैं और इस कारण उनके जन्म स्थान आदि का वर्णन भी 'धन्य मथुरा', 'धन्य गोकुल' इत्यादि शब्दों में करते हैं। उनके जन्म और उनकी किशोरावस्था और बाद के भी सारे जीवन को लोग दैवी जीवन मानते हैं। उन्हें श्रीकृष्ण इतने महान और प्यारे लगते हैं कि ''मोर मुकुट धर मुरली सोहे'' आदि पदों से वे उनके श्रृंगार का भी वर्णन करते हैं। परन्तु फिर भी श्रीकृष्ण के जीवन में जो मुख्य विशेषतायें थीं और जो अनोखी प्रकार की महानता थी, उसको लोग आज यथार्थ रूप में और स्पष्ट रीति से नहीं जानते। उदाहरण के तौर पर वे यह नहीं जानते कि श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना आकर्षक क्यों था और वे पूज्य श्रेणी में क्यों गिने जाते हैं? पुनश्च, उन्हें यह भी ज्ञात नहीं है कि श्रीकृष्ण ने उस उत्तम पदवी को किस उत्तम पुरुषार्थ से पाया था। अत: हम यहाँ इन रहस्यों का कुछ संक्षिप्त वर्णन करेंगे क्योंकि इन रहस्यों का ज्ञान अत्यावश्यक है।

गायन-योग्य और पूजने योग्य जीवन में अन्तर

किसी नगर या देश की जनता जन्म-दिन उन्हीं का मनाया करती है जिनके जीवन में कुछ महानता रही हो। परन्तु आप देखेंगे कि महान् व्यक्ति भी दो प्रकार के हुए हैं। एक तो वे जिनका जीवन जन-साधारण से काफ़ी उच्च तो था परन्तु फिर भी उनकी मनसा पूर्ण अविकारी न थी, उनके संस्कार पूर्ण पवित्र न थे और उनकी काया सतोप्रधान तत्वों की बनी हुई न थी। उन्हें देवता नहीं माना जा सकता, क्योंकि उनका जन्म अपवित्र रीति (मैथुनी रीति) से माता-पिता की काम-वासना के परिणामस्वरूप हुआ था। कुछ विशेष गुणों और कर्त्तव्यों के कारण ऐसे व्यक्तियों का गायन तो सारे संसार में होता है परन्तु पूजन नहीं होता क्योंकि पूजा केवल देवी-देवताओं की या देवों-के-देव परमपिता परमात्मा की ही होती है। दूसरे प्रकार के व्यक्ति वे हैं जो पूर्ण निर्विकारी थे; जिनके संस्कार सतोप्रधान थे और जिनका जन्म भी काम विकार से न होकर योगबल द्वारा हुआ था। ऐसे व्यक्तियों को 'देवता' कहा जाता है; उनका जीवन गायन-योग्य भी होता है और पूजन-योग्य भी। श्रीकृष्ण और श्रीराम ऐसे ही पूजन-योग्य व्यक्ति थे। परन्तु श्रीकृष्ण के बारे में यह महत्वपूर्ण रहस्य लोग नहीं जानते। हालांकि इसी कारण ही उनके व्यक्तित्व में विशेष आकर्षण था और उनके जीवन में दिव्यता थी।

ध्यान देने योग्य बात है कि पहले प्रकार के व्यक्तियों का जीवन 'बाल्यकाल' से ही गायन या पूजने के योग्य नहीं होता बल्कि वे बाद में कोई उच्च कार्य करते हैं जिसके कारण देशवासी या नगरवासी उनका जन्म-दिन मनाते हैं। परन्तु श्रीकृष्ण तथा श्रीराम आदि देवता तो बाल्यावस्था से ही महात्मा थे; वे कोई सन्यास करने या शिक्षा-दीक्षा लेने के बाद पूजने के योग्य नहीं बने थे। आपने देखा होगा कि उनके बाल्यावस्था के चित्रों में भी उनको प्रभा-मण्डल (क्राउन ऑफ लाइट) से सुशोभित दिखाया जाता है जबकि अन्यान्य महात्मा लोगों को सन्यास करने के पश्चात् अथवा किसी विशेष कर्त्तव्य के पश्चात् ही प्रभा-मण्डल दिया जाता है। श्रीकृष्ण की किशोरावस्था को भी इसी कारण से माताएँ बहुत याद करती हैं और भगवान् से प्रार्थना करती हैं कि यदि बच्चा हो तो श्रीकृष्ण जैसा हो, क्योंकि वे बाल्यावस्था से ही पूज्य थे।

श्रीकृष्ण के 'मोर-मुकुट' से उनकी पवित्रता सिद्ध है

मोर-पंख पवित्रता का प्रतीक है। धर्म-ग्रंथों पर कई लोग जो चंवर घुमाते हैं वह चंवर मोर-पंखों के बने होते हैं। अपनी पुस्तकों में भी कई लोग मोर-पंख रखते हैं। इसका कारण यही है कि लोग मोर को पवित्र पक्षी मानते हैं। श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर-पंख इसी रहस्य के प्रतीक हैं कि वह पूर्ण पवित्र थे।

इसके अतिरिक्त प्रभा-मण्डल भी निर्विकारिता का सूचक है। 'श्री' की उपाधि से भी सिद्ध होता है कि कृष्ण पूर्ण पवित्र थे। आज तो 'श्री' शब्द को रस्मी तौर पर 'मिस्टर' शब्द के स्थान पर प्रयोग कर दिया जाता है परन्तु वास्तव में 'श्री' शब्द केवल देवताओं के नाम के आगे प्रयोग हो सकता है क्योंकि उनका जीवन पवित्र होता है। श्रीकृष्ण की 'वैकुण्ठनाथ' की उपाधि से सिद्ध है कि उनका जन्म पूर्ण पवित्र था। आप सोचिये कि जबकि श्रीकृष्ण की अनन्य भक्ति करने वाले नर-नारी भी काम-विकार को छोड़कर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हैं तो स्वयं श्रीकृष्ण का जन्म इस विकार से कैसे हुआ होगा? मीरा का उदाहरण हमारे सामने है उसने श्रीकृष्ण की भक्ति के कारण अपने सारे जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन किया और इसके लिए विष का प्याला भी पीना सहर्ष स्वीकार कर लिया। अत: जबकि श्रीकृष्ण की भक्ति के लिए, उनका क्षणिक साक्षात्कार मात्र करने के लिए और उनसे कुछ मिनट रास रचाने के लिए भी काम-विकार का पूर्ण बहिष्कार ज़रूरी है तो आप सोचिये कि श्रीकृष्ण के माता-पिता, मित्र-सम्बन्धी इत्यादि काम-वासना वाले लोग कैसे हो सकते हैं? श्रीकृष्ण के साक्षात् स्वरूप को तो काम-वासना वाले लोग छू भी नहीं सकते, उन्हें निहार भी नहीं सकते। अत: सिद्ध है कि उनका जन्म और जीवन पूर्णत: पवित्र था। इस कारण यह वाक्य प्रचलित है कि 'जहाँ श्याम हैं, वहाँ काम नहीं और जहाँ काम है वहाँ श्याम नहीं।'

श्रीकृष्ण पर मिथ्या कलंक

श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण पूर्ण निर्विकारी व बिल्कुल ही पवित्र थे। इसलिए भक्त लोग उनके प्रत्येक अंग के नाम के पूर्व 'कमल' शब्द जोड़ते हैं; यथा- कमल नयन, कमल मुख, कमल हस्त इत्यादि। परन्तु दूसरी ओर आज लोग श्रीकृष्ण पर अनेक मिथ्या कलंक भी लगाते हैं। वे कहते हैं - श्रीकृष्ण की 108 पट-रानियाँ थीं, उनसे उनके हज़ारों बच्चे पैदा हुए, उन्होंने गोपियों के चीर चुराये, उन्होंने हिंसक युद्ध कराया, इत्यादि-इत्यादि। इस प्रकार वे काम, क्रोध, हिंसादि विकारों के दाग लगाते हैं। इससे बहुत अनर्थ हुआ है। आप ही सोचिये कि जबकि महात्मा लोग भी अहिंसा पालन करते हैं और ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हैं तो क्या महात्माओं के भी पूज्य देव-शिरोमणि श्रीकृष्ण पूर्ण अहिंसक और अकामी न होंगे? द्वापर युग और कलियुग के लोगों के अपने जीवन में ही काम, क्रोध, हिंसा आदि ने पक्के डेरे डाल रखे हैं; इसलिए ''जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'' की उक्ति के अनुसार वे विकारी लोग श्रीकृष्ण के उज्जवल चरित्र पर भी काले धब्बे लगाते हैं। इस बारे में हमें एक दृष्टान्त याद आता है –

कहते हैं कि एक किसान ने अपनी ज़मीन का लगान (कर, रेवेन्यु) राजा को नहीं दिया था। इस अपराध की सज़ा में राजा ने उसे शहर से निकल जाने की आज्ञा दी। वह किसान नगर छोड़कर जंगल में चला गया। वहाँ एक कुटिया के बाहर उसने एक सन्यासी को बैठे देखा। किसान ने सन्यासी से पूछा – ''क्यों जी, आपने अपनी ज़मीन का लगान नहीं दिया था जिससे कि राजा ने आपको नगर से निकाल दिया?''

अब वास्तव में राजा ने सन्यासी को निकलने की आज्ञा तो नहीं दी थी परन्तु किसान को जैसा अनुभव था, उसने दूसरे के बारे में भी वैसा सोच लिया। ठीक इसी प्रकार, जिन लोगों को पूर्ण पवित्रता का अनुभव नहीं है, वे समझते हैं कि सभी विकारी हैं और सभी विकारी थे।

सोलह कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण के लिए तो प्रसिद्ध है कि उन्होंने द्रोपदी के चीर बढ़ाये थे और लाज रखी थी और 'देवता' शब्द का तो प्रयोग ही उन्हीं के लिए है जिनकी दृष्टि, वृति और कृति दिव्य हो। यदि किसी के कर्म मनुष्यों की तरह विकारी हैं तो वह 'पूज्य' अथवा 'देवता' किस अर्थ में कहा जा सकता है?

अत: निस्संदेह श्रीकृष्ण पूर्ण निर्विकारी थे। वे सोलह कला सम्पूर्ण थे। आज लोग कला का अर्थ नृत्य कला, संगीत कला इत्यादि मानते हैं और वे समझते हैं कि श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाने में, रास रचाने में, युद्ध लड़ने में निपुण थे और इस प्रकार सोलह कला सम्पन्न थे। परन्तु वास्तव में कला का अर्थ दर्जा (डिग्री) है। चाँद अमावस्या के बाद से लेकर पूर्णमासी तक प्रतिदिन जितना बढ़ता है उसे कला कहते हैं। पूर्णमासी के दिन वह सोलह कला सम्पूर्ण प्रकाशमान होता है। इसी प्रकार श्रीकृष्ण को 'सोलह कला सम्पूर्ण' कहने का अर्थ यह है कि वह पूर्ण पवित्र थे, उनमें अपूर्णता न थी। यह महिमा किसी महात्मा, गुरू या व्यक्त देवता की नहीं है। अत: अन्दाज़ा लगाना चाहिये कि वह कितने उच्च थे; कितने महान् थे! जन्म-अष्टमी के दिन ऐसी दिव्य आत्मा का जन्मदिन मनाया जाता है। यह किसी साधारण आत्मा या सामान्य महात्मा का जन्म-दिन नहीं है। इसलिए इसे समझकर मनाना चाहिए।